

मानव के अहंकार का परिणाम मूर्तिपूजा

सञ्जय मोहन मित्तल, न्यू जर्सी, अमेरिका

ब्रह्म ह देवेभ्यो विजिग्ये तस्य ह ब्रह्मणो विजये देवा अमहीयन्त ।

त ऐक्षन्तास्माकमेवायं विजयोऽस्माकमेवायं महिमेति ॥

केनोपनिषद् ३:१

ईश्वर ने मानव की रचना की, उसमें प्राण फूँके। उसे वेदों का ज्ञान भी दिया। मानव ने भी ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया परन्तु अपने बढ़ते सामर्थ्य को देखकर मानव के मन में अहंकार ने जन्म ले लिया। अहंकार ने मानव को अपनी स्वयं की सत्ता का आभास कराया। मानव ने कहा कि ईश्वर! मैं भी तुझे रच कर तेरे उपकार का बदला चुका सकता हूँ। और मानव ने ईश्वर की मूर्ति का अविष्कार कर दिया। यह कहा कि तू मुझमें प्राण फूँक सकता है तो मैं क्या कम हूँ और ईश्वर की मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा की विधि रच डाली। साथ में यह भी कहा कि ईश्वर! तू हर समय मेरे साथ रहकर मुझे स्वार्थ में किए गए बुरे कर्मों को करने से रोकता है इसलिए अब से मैं तुझे मन्दिरों में कैद कर देता हूँ, तू वहीं रह। मैं यदा कदा तुझसे मिलने आया करूँगा। मैं तेरा भक्त हूँ परन्तु तेरा सर्वव्यापी रूप मुझे अब स्वीकार नहीं। आगे से मैं केवल तेरे उसी साकार रूप की पूजा करूँगा जिसको मैंने ही रच कर मन्दिरों में सीमित कर दिया है।

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। यजुः ४०.१

न तस्य प्रतिमाऽस्ति यस्य नाम महद्यशः। यजुः ३२:३

वेदों को देखें तो ईश्वर का सर्वव्यापी, सभी जगह समान रूप से उपस्थित रहने वाला रूप ही मिलता है। साथ ही में यह भी कि उसकी कोई प्रतिमा नहीं बन सकती।

नमो ब्रह्मणे । नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म

वदिष्यामि । ऋतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु ।

अवतु माम् । अवतु वक्तारम् । तैत्तिरीयोपनिषद् १:२

तैत्तिरीयोपनिषद् में प्रकृति के बलों को साक्षात ब्रह्म का साकार स्वरूप माना है। इस प्रकार वेदों व उपनिषदों में ब्रह्म के निराकार और साकार दोनों ही स्वरूपों का वर्णन है। परन्तु वर्तमान में पूजे

जा रहे लौकिक भगवानों और उनकी मूर्तियों की पूजा का प्रावधान वहाँ नहीं है। दुर्भाग्य है कि वेदों की वाणी से दूर जा रहे मानव ने वेदों की उपेक्षा ही करना शुरू कर दिया।

वैदिकों और पौराणिकों की निराकार ब्रह्म और साकार ब्रह्म की लड़ाई पुरानी है। सन २०१९ के राजनैतिक परिपेक्ष में यह लड़ाई और घमासान हो गई है। आजकल तो सब जगह धर्मगुरु कहलाने वाले बाबाओं ने अपना डेरा जमा लिया है। इन बाबाओं का बर्चस्व ही साकार मूर्ति की पूजा पर टिका है। पण्डितों की उगाही मूर्ति के नाम पर ही होती है। जितनी अधिक मूर्तियाँ उतनी ही बार यजमान से धन चढाने के लिए कह सकते हैं। आजकल ईश्वर से ज्यादा बाबाओं के भक्त दिखाई देते हैं। बाबाओं के इस दुष्प्रचार का परिणाम यह है कि यदि कोई वेदों की बात करे तो लोग दुराग्रह कर व अभद्र भाषा का प्रयोग कर उसको चुप कराने का प्रयास करते हैं। सत्य तो सत्य है। केवल वेद ही हैं जो प्रक्षेपण से बचे हुए हैं। बाकि सभी धर्मग्रन्थों में समय के साथ काफी फेरबदल हो चुका है। सत्तायें आती जाती रहेगी। परन्तु वेदों की वाणी शाश्वत है और रहेगी।

यदि मन्यसे सुवेदेति दभ्रमेवापि नूनं त्वं वेत्थ ब्रह्मणो रूपम् ।

यदस्य त्वं यदस्य च देवेष्वथ नु मीमांस्यमेव ते मन्ये विदितम् ॥ केनोपनिषद् २:१

केनोपनिषद् के इस मन्त्र में स्पष्ट है कि ईश्वर का स्वरूप कोई भी पूर्णतया समझ ही नहीं सकता। निराकार साकार की लड़ाई निरर्थक है और लडने वालों के अहंकार का ही परिणाम है। लड़ाई की जड़ ईश्वर का निराकार अथवा साकार रूप नहीं है। लड़ाई की जड़ मन्दिर के अन्दर व मन्दिर के बाहर मानव व्यवहार में आया भेद है। बहुत बार तो मन्दिर के बाहर मानव के व्यवहार को देख यह भ्रम होता कि क्या यह वही है जो अभी थोड़ी ही देर पहले मूर्ति के सामने इतना भला बन रहा था। जो अपने संस्कारों के कारण बिना मूर्ति के ईश्वर का ध्यान कर ही नहीं सकते, उनको ईश्वर का सर्वव्यापी रूप भी स्वीकार करना पड़ेगा, नहीं तो मन्दिर से दूर हटते ही उनके कर्मों पर पाप हावी हो जाएगा। मानव को ईश्वर की उपासना केवल मन्दिर में ही नहीं बल्कि सदैव ही करनी चाहिए। इसी से अहंकार आदि अन्य बुराईयों से मुक्ति मिलेगी और स्वार्थवश पापकर्म करने की इच्छाओं का शमन होगा।